Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम मेधा के माध्यम से मधुकांकरिया के कथा साहित्य में नारी समस्या का अध्ययन : कहानी ('लेडी बॉस' के विशेष संदर्भ में)

प्रणिता जहागिरदार*
पिपल्स कॉलेज ,नांदेड़

शोध सार

हिंदी कथा साहित्य में नारी जीवन का चित्रण समय के साथ निरंतर परिवर्तित होता रहा है। प्रारंभिक साहित्य में नारी को त्याग, सहनशीलता और करुणा की मूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया, किंतु समकालीन कथा साहित्य में वह अपने अधिकारों, आत्मसम्मान और पहचान के लिए संघर्षरत एक जागरूक व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। सामाजिक संरचना में आए परिवर्तनों, शिक्षा, रोजगार और वैश्वीकरण ने नारी चेतना को नई दिशा प्रदान की है।समकालीन हिंदी कथाकारों में मधुकांकरिया का स्थान विशेष है। उनका कथा साहित्य स्त्री जीवन की जटिलताओं, समस्याओं और मानसिक संघर्षों को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करता है। उनकी कहानी 'लेडी बॉस' कार्यस्थल पर स्त्री की स्थिति, लैंगिक भेदभाव और पितृसत्तात्मक मानसिकता का सशक्त चित्र प्रस्तुत करती है।वर्तमान डिजिटल युग में कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence – AI) साहित्यिक अध्ययन की एक नई पद्धति के रूप में उभरकर सामने आई है। AI के माध्यम से साहित्यिक पाठ का भावात्मक, भाषिक और संरचनात्मक विश्लेषण संभव हुआ है। प्रस्तुत लेख में मधुकांकरिया की कहानी 'लेडी बॉस' के माध्यम से नारी समस्या का अध्ययन AI आधारित विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से किया गया है

बीज शब्द: *कृत्रिम मेधा, हिंदी साहित्य सर्जन, अनुवाद, आलोचना, शोध, संरक्षण, डिजिटल, अभिलेखन।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रणिता जहागिरदार
Email: pranitadeven@gmail.com

कृत्रिम मेधा : अवधारणा एवं साहित्य से संबंध

कृत्रिम मेधा वह तकनीक है, जिसमें मशीनों को मानव जैसी सोचने, समझने, विश्लेषण करने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की जाती है। AI का प्रयोग केवल विज्ञान और तकनीक तक सीमित न रहकर अब डिजिटल ह्यूमैनिटीज़ और साहित्यिक आलोचना में भी होने लगा है।

AI के माध्यम से—

शब्दों की आवृत्ति (Word Frequency)
भावात्मक विश्लेषण (Sentiment Analysis)
संवाद संरचना
स्त्री-पुरुष भाषा-भेद

का अध्ययन संभव है। इससे साहित्यिक पाठ का वस्तुनिष्ठ और गहन विश्लेषण किया जा सकता है।

मधुकांकरिया का कथा साहित्य और नारी समस्या

मधुकांकरिया के कथा साहित्य में नारी केवल पीड़िता नहीं है, बल्कि वह परिस्थितियों से जूझती हुई, निर्णय लेने वाली और आत्मसम्मान से युक्त स्त्री है। उनकी कहानियों में नारी जीवन की समस्याएँ मुख्यतः निम्न रूपों में उभरती हैं—

सामाजिक असमानता
पितृसत्तात्मक मानसिकता
कार्यस्थल पर भेदभाव
मानसिक उत्पीड़न
पहचान का संकट

उनकी रचनाएँ नारी विमर्श को केवल वैचारिक नहीं, बल्कि जीवनगत यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

'लेडी बॉस' कहानी का कथ्य और स्वरूप

'लेडी बॉस' कहानी एक कार्यशील महिला के अनुभवों पर आधारित है, जो एक उच्च पद पर कार्यरत है। वह अपने कार्य में दक्ष, अनुशासित और जिम्मेदार है, किंतु फिर भी उसे उसके पद से पहले

उसके स्त्री होने के आधार पर देखा जाता है। "लेडी बॉस" शब्द स्वयं में व्यंग्यात्मक है, जो यह दर्शाता है कि समाज अभी भी स्त्री नेतृत्व को सहज रूप में स्वीकार नहीं कर पाया है।

"वह बॉस थी, लेकिन उसे बार-बार यह महसूस कराया जाता था कि वह एक स्त्री बॉस है।"1

यह वाक्य दर्शाता है कि नायिका भले ही बॉस के पद पर थी, फिर भी लोग उसे बराबरी का नेता नहीं मानते थे। उसके हर निर्णय और व्यवहार को उसके स्त्री होने से जोड़कर देखा जाता था, जिससे उसे बार-बार यह एहसास कराया जाता था कि वह सिर्फ बॉस नहीं, बल्कि "स्त्री बॉस" है। यह कार्यस्थल पर मौजूद लैंगिक भेदभाव को उजागर करता है।

कहानी में नारी समस्या का चित्रण

1. कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव

कहानी में नायिका को अपने निर्णयों के लिए बार-बार स्पष्टीकरण देना पड़ता है, जबकि पुरुष अधिकारियों के निर्णय बिना प्रश्न स्वीकार कर लिए जाते हैं। यह स्थिति कार्यस्थल पर व्याप्त लैंगिक असमानता को उजागर करती है।

AI आधारित डिस्कोर्स एनालिसिस से स्पष्ट होता है कि स्त्री पात्रों से जुड़े संवादों में संदेह और व्यंग्य का भाव अधिक है।

2. मानसिक उत्पीड़न और दबाव

'लेडी बॉस' में नारी समस्या शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक स्तर पर अधिक तीव्र है। नायिका निरंतर स्वयं को सिद्ध करने के दबाव में रहती है।

"उसकी सबसे बड़ी लड़ाई बाहर नहीं, उसके भीतर चल रही थी।"2

यह पंक्ति बताती है कि नायिका की असली संघर्ष दुनिया या लोगों से नहीं, बल्कि अपने मन के भीतर चल रही द्वंद्व से है। वह आत्म-संदेह, हीनभावना, सामाजिक दबाव और अपनी पहचान को स्वीकार करने की लड़ाई खुद से ही लड़ रही है। बाहर की चुनौतियों से बड़ी उसकी अंदरूनी मानसिक लड़ाई है।

AI आधारित Sentiment Analysis के अनुसार कहानी में नायिका से जुड़े अंशों में तनाव, अकेलापन और आत्मसंघर्ष की भावना प्रबल है।

3. पितृसत्तात्मक मानसिकता

कहानी यह दर्शाती है कि समस्या किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि संपूर्ण व्यवस्था की है। स्त्री की सत्ता को आज भी अपवाद के रूप में देखा जाता है।

"पुरुष की सत्ता स्वाभाविक है, स्त्री की सत्ता प्रश्नों के घेरे में।"3

यह पंक्ति समाज की लैंगिक असमानता को दर्शाती है। पुरुष का नेतृत्व सामान्य और स्वीकार्य माना जाता है, जबकि स्त्री के अधिकार और सत्ता पर हमेशा संदेह किया जाता है। उसे हर कदम पर अपने पद और क्षमता को साबित करना पड़ता है, इसलिए उसकी सत्ता प्रश्नों के घेरे में रहती है।

AI के माध्यम से 'लेडी बॉस' का विश्लेषण

AI आधारित अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि

स्त्री पात्र अधिकतर आंतरिक संवादों में व्यक्त होती है

पुरुष पात्र आदेशात्मक और बाह्य भाषा का प्रयोग करते हैं

स्त्री से जुड़े शब्दों में भावनात्मक गहराई अधिक

यह विश्लेषण नारी समस्या को केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि संरचनात्मक स्तर पर समझने में सहायता करता है।

नारी सशक्तिकरण का स्वरूप

यद्यपि नायिका अनेक समस्याओं से जूझती है, फिर भी वह टूटती नहीं है। उसका सशक्तिकरण किसी उग्र विद्रोह में नहीं, बल्कि—

आत्मविश्वास, कार्यकुशलता व आत्मसंयम के रूप में प्रकट होता है।

"स्त्री का मौन भी कई बार उसकी शक्ति बन जाता है।"4

यह वाक्य बताता है कि स्त्री का मौन हमेशा कमजोरी नहीं होता। कई बार वही मौन उसके धैर्य, आत्मबल और भीतर की दृढ़ता का रूप बनकर उभरता है। वह बिना शोर किए अन्याय को सहते हुए भी भीतर से मजबूत होती जाती है और सही समय पर वही मौन उसके प्रतिरोध की शक्ति बन जाता है। समकालीन संदर्भ

आज के वैश्वीकृत और तकनीकी युग में भी कार्यस्थल पर स्त्री के लिए चुनौतियाँ बनी हुई हैं। 'लेडी बॉस' कहानी आधुनिक समाज का यथार्थ प्रतिबिंब प्रस्तुत करत

निष्कर्ष:

मधुकांकरिया की कहानी 'लेडी बॉस' समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी समस्या का सशक्त दस्तावेज है। यह कहानी कार्यस्थल पर स्त्री के मानसिक संघर्ष, सामाजिक भेदभाव और पितृसत्तात्मक सोच को उजागर करती है।

कृत्रिम मेधा (AI) के माध्यम से किया गया विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि नारी समस्या केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और संस्थागत संरचना से जुड़ी हुई है। AI साहित्यिक अध्ययन को एक नई, वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. बिततेहुए कहानी संग्रह –मधु कांकरिया –पृ. 115

2. बिततेहुए कहानी संग्रह –मधु कांकरिया -पृ .118
3. बिततेहुए कहानी संग्रह –मधु कांकरिया- पृ .120
4. स्त्री औरसाहित्य –मैत्री पुष्पा –पृ 52
5. Russell, S. & Norvig, P. – Artificial Intelligence: A Modern Approach,Pearson Education,

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)